सत्ताविषयक अन्वीक्षा

यशदेव शल्य

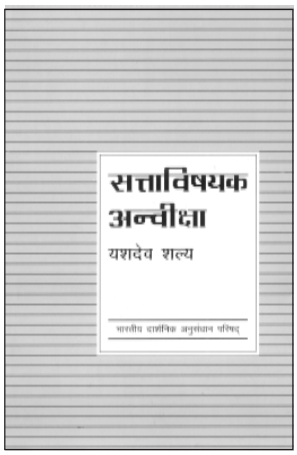

2004
(2nd edition)
248 pages
Hard Back
ISBN 81-85636-82-6
Rs 250

दार्शनिक चिन्तन के आदि काल से ही सत्ता दर्शन का एक प्रमुख विषय रही है। किन्तु आधुनिक पश्चिम में, और उसके प्रभाव में हमारे देश के स्वातन्त्रयोत्तरकालीन चिन्तन में सत्ता को विचार के लिए वर्जनीय विषय के रुप में देखा गया । इसके बावजूद सत्ताविषयक विचार प्राचीन की आवृत्ति मात्र नहीं हो सकता था, नवारंभ ही हो सकता था । इस ग्रन्थ में यही हुआ है। यह ग्रन्थ भारतीय चिन्तन के नव प्रभात का वैतालिक है।

इस लेखक के लिए दर्शन एक ऐसा मूलगामी सैद्धान्तिक चिन्तन है जो स्वरुपतः समग्रात्मक होता है। अपनी इसी मान्यता के कारण उसने न केवल तत्वमीमांसा और ज्ञानमीमांसा के लिए परम्परागत मूल प्रश्नों की ही, सत्ता–विषयक इस दृष्टि के अनुसार व्याख्या की है बल्कि मानव–व्यक्तित्व, समाज, संस्कृति, विज्ञान और कला जैसे, तत्वमीमांसा के लिए बाहरी समझे जाने वाले, विषयों की भी उसी सिद्वान्त के अन्तर्गत व्याख्या की है । किन्तु उसके लिए दर्शन केवल एक सैद्वान्तिक तर्क–व्यवस्था मात्र नहीं है बल्कि अनुभूति, साक्षात्कार, प्रतिभा का अभिव्यंजन, आत्मप्रकाशन, पुनरवगमन भी है– वस्तुतः एक बौद्विक महाकाव्य।

यशदेव शल्य का जन्मः २६ जून १९27, फरीदकोट (पंजाब)। आरम्भिक शिक्षा गुरुकुल रायकोट (जिला लुधियाना) में पाने के बाद घर पर स्वशिक्षा। इस प्रकार दर्शन का अध्ययन उपाधि के लिए अधीत एक वैकल्पिक विषय के रुप में नहीं किया।

प्रकाशित कृतियाँः पन्त का काव्य और युग, मनस्तत्व, दार्शनिक विश्लेषण, ज्ञान और सत्, संस्कृतिः मानव–कर्तृत्व की व्याख्या, विषय और आत्म, तथा मनुष्य और जगत।